DETAILS EXPLANATIONS

Paper Code : RPSCEE26 | : RPSCCE26 | RPSCME26

[अनुभाग-अ]

1. **(क)** (i) भोजनालय (ii) नरेन्द्र
(ख) (i) छात्र + आवास (ii) रमा + ईश

2. **(क)** (i) यथासमय (ii) प्रतिध्वनि
(ख) (i) हर दिन (ii) मरण तक

3. **(क)** (i) उपदेश (ii) दुर्जन
(ख) (i) सद् + आचरण (ii) सम् + चार

4. **(क)** (i) रंगीन (ii) कहानीकार
(ख) (i) ता (ii) इक

5. **(क)** (i) निशा (ii) चन्द्रमा
(ख) (i) निराशा (ii) अधर्म

6. (i) समाप्त – नीचे का, अंत का (ii) न करने योग्य – खजाना, खान

7. (i) अमर (ii) अनाथ
(iii) जलचर (iv) अजर

8. (i) अनुजा (ii) अर्द्ध
(iii) आहार (iv) अभीष्ट

9. (i) भोजन बनाने की व्यवस्था/का प्रबंध करें।
(ii) 'उत्साह' शीर्षक निबंध अच्छा है।
(iii) अब विंध्याचल हरा भरा हो गया।
(iv) मैं मंगलवार को व्रत रखता हूँ।

10. (i) **अर्थ** : बहुत तेज़ दौड़ना।
वाक्य में प्रयोग : राजधानी एक्सप्रेस हवा से बातें करती है।

(ii) **अर्थ** : घबरा जाना।
वाक्य में प्रयोग : पुलिस को देखकर चोर के हाथ–पाँव फूल गये।

(iii) **अर्थ** : पछताना।
वाक्य में प्रयोग : जो समय का सदुपयोग नहीं करते हैं, वे हाथ मलते रह जाते हैं।

(iv) **अर्थ** : मुश्किल से बचना।
वाक्य में प्रयोग : आंतकवादियों के हमले में वह बाल–बाल बच गया।

(v) **अर्थ** : घबरा जाना।
वाक्य में प्रयोग : परीक्षा में कठिन प्रश्न देखकर छात्रों को नानी याद आ गई।

(vi) **अर्थ** : बहुत प्यारा।

वाक्य में प्रयोग : सुराश अपनी माँ की आँखों का तारा है।

(vii) **अर्थ** : घबरा जाना।

वाक्य में प्रयोग : पुलिस को देख कर चोर पसीना–पसीना हो गया।

(viii) **अर्थ** : मुश्किल कार्य करना।

वाक्य में प्रयोग : आजकल चुनाव लड़ना आसान काम नहीं है, लोहे के चने चबाना है।

11. (i) **अर्थ** : बिना मेहनत के ही उपलब्धि होना।

वाक्य में प्रयोग : भिखारी के कटोरे में कोई लॉटरी डाल गया और भिखारी के लॉटरी खुल गई। यह तो वही हुआ कि अंधे के हाथ बटेर लग गई।

(ii) **अर्थ** : कुप्रशासन और अजागरूक जनता।

वाक्य में प्रयोग : सब जगह भ्रष्टाचार है, कर्मण्यता है और न कोई इसे देखने वाला है न कोई इसके विरूद्ध आवाज उठाता है। यहाँ अंधेर नगरी चौपट राजा है।

(iii) **अर्थ** : गुणों के विपरीत नाम।

वाक्य में प्रयोग : पड़ौसी चूहे से भी डरता है लेकिन नाम है बहादुर सिंह। सच है आँख का अंधा नाम नयनसुख।

(iv) **अर्थ** : दोनों ओर संकट।

वाक्य में प्रयोग : नरेश लड़की की शादी में रूपये न लगाए तो रिश्ता टूटता है। और रूपए खर्च करे तो कर्ज में डूबता है। उसके तो आगे कुआँ है और पीछे खाई है।

(v) **अर्थ** : अपने सामान से थोड़ा–सा भी ध्यान हटा की सामान की चोरी हो सकती है।

वाक्य में प्रयोग : आजकल रेल में सफर करना मुश्किल है। अपने सामान का हमेशा ध्यान रखो, क्योंकि आँख बचीं और माल यारों का।

(vi) **अर्थ** : इच्छित वस्तु की प्राप्ति होना।

वाक्य में प्रयोग : वर्षों बेरोजगारी भोगने के बाद एक दिन सुनील को सरकार की ओर से नियुक्ति पत्र मिल गया। सुनील की मनेच्छा पूर्ण हुई। सच है, अंधा क्या चाहे दो आँख।

(vii) **अर्थ** : पूर्णतः अनियंत्रित।

वाक्य में प्रयोग : कमल के माता–पिता तो पहले ही गुजर गये थे अब यहाँ उसके बड़े भाई का भी तबादला हो गया। अब तो वह रहा–सहा भी बिगड़ जाएगा। अब कौन है उसको टोकने वाला अब तो आगे नाथ न पीछे पगहा।

(viii) **अर्थ** : दोषी की संगति से निर्दोष भी दंड़ित हो जाता हैं।

वाक्य में प्रयोग : कुछ लोग पुलिस पर पत्थर फेंक कर घरों में घुस गए। पुलिस ने घरों की तलाशी ली और सभी को पकड़ ले गई, उनकों भी जिन्होंने पत्थर नहीं फेंके थें। ऐसा बहुत होता है कि गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाता है।

12. (i) प्रतिशोध (ii) दुःखी

(iii) रिसना (iv) उपजाऊ

(v) पूर्ति (vi) प्रशंसा

(vii) हैरान (viii) भावना

[अनुभाग-ब]

13. (i) पन्ना का त्याग।

(ii) बनवीर पर पन्नाधाय ने हमला किया।

(iii) दुष्ट बनवीर ने पंलग पर सोए बच्चे को तलवार चला कर मार डाला।

(iv) दुष्टों।

14. (i) पराधीन सपनेहु सुख नाहिं।

जो व्यक्ति दूसरों के अधीन रहता है, दूसरों का गुलाम या दास बन जाता है, वह कोई भी काम अपनी इच्छा से नहीं कर पाता है। वह सदा अपने स्वामी से दबाया–सताया जाता है तथा उसका सदा शोषण–उत्पीड़न होता है। उसे सपने में भी सुख नहीं मिल पाता अतः पराधीन जीवन सर्वधा कष्टदायीं एवं निन्दनीय है।

(ii) महत्वाकांक्षाओं का मोती निर्ममता की सीप में पलता है।

महत्वाकांक्षाओं के लिए व्यक्ति को स्नेहभाव एवं निकट सम्बन्ध का भी परित्याग करना पड़ता है। कठोर से कठोर आचरण करने पर ही महत्वाकांक्षा फलवती होती है और तभी उसका अच्छा और अनुकूल परिणाम निकलता है।

15. नगर निगम के प्रशासक को एक पत्र लिखिए जिसमें बढ़ते हुए प्रदूषण की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए सफाई न करने की शिकायत की गई हो।**[स्वयं करें।]**

अथवा

मुख्य परीक्षा–2018 की अंकतालिका में आपका नाम अधूरा छपा है। राजस्थान के तकनीकीय विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार महोदय को एक कार्यालयी पत्र लिखिए जिसमें नाम सुधार का अनुरोध किया गया हो। **[स्वयं करें।]**

16. कार्यालय ज्ञापन (भारत सरकार के मंत्रालयों एवं विभागों) के बीच जारी किए जा सकने वाले कार्यालय ज्ञापन का प्रारूप।

सं. 39/08/2018

भारत सरकार

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

नई दिल्ली, 30 मई, 2019

कार्यालय ज्ञापन

विषय : कार्यालय के स्थान–परिवर्तन की सूचना।

अधोहस्ताक्षरकर्त्ता को यह निदेश हुआ है सभी मंत्रालयों को यह सूचित कर दिया जाए कि इस मंत्रालय की योजना शाखा का कार्यालय वर्तमान भवन को छोड़कर G-EA/486, लक्ष्मीबाई मार्ग पर पहुँच गया है। इसके टेलिफोन नं. अब 7737040910 हैं।

ह.

अपर सचिव

अथवा

अधिसूचना (भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशित होने के लिए प्रस्तुत प्रारूप)

भारत सरकार

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

अधिसूचना

संख्या : 08/05/2019 जयपुर, 30 जून, 2019

राष्ट्रपति अगला आदेश जारी होने तक भारतीय प्रशासनिक सेवा, श्रेणी-II के निम्नलिखित अधिकारियों को 25 जून, 2019 से भारतीय प्रशासनिक सेवा, श्रेणी-I के स्थान में स्थानापन्न रूप से नियुक्त करते हैं–

(क) श्रीमती .....

(ख) श्री .....

आज्ञा से

ह.

संयुक्त सचिव, भारत सरकार

क्रम संख्या : 08/05/2019/(क12)82/51 जयपुर, 23 मई, 2019

प्रतिलिपि : सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु–

1. सचिव, राष्ट्रपति, राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली।
2. निजी सचिव, सूचना और प्रसारण मंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली।

3. श्री....., उपसचिव, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली।
4. निदेशक, राजकीय मुद्रणालय, नई दिल्ली को प्रतिलिपि भेजकर लेख है कि इस अधिसचूना को भारतीय राजपत्र के भाग-I, अनुभाग-3 में प्रकाशित कर उसकी 50 प्रतियाँ इस कार्यालय को भिजवाएँ।
5. रक्षित पत्रावली।

ह.

संयुक्त सचिव, भारत सरकार

17. अक्रूर का रथ दोपहर में यमुना तट पर पहुँचा। कृष्ण की अनुमति से अक्रूर ने पवित्र यमुना जल में स्नान किया। मुख–प्रक्षालन करके वे यमुना जल में प्रविष्ट हुए। उन्होंने डुबकी लगाई और वे ईश्वर का चितंन करने लगे। जल में निमग्न होकर उन्होंने देखा कि श्री बलराम (भगवान कृष्ण के अग्रज) एक सहस्त्र सर्पमुखों से संयुक्त है, उन्होंने पीतांम्बर तथा रत्न–जडित मालाएँ धारण की हुई हैं। शेष जी की गोद में भगवान कृष्ण विराजमान हैं जिनमें विष्णु के सभी चिह्न विराजमान हैं और ऋषि, मुनि उनकी अर्चना कर रहे हैं। अक्रूर को आश्चर्य हुआ कि वे दोनों इतनी जल्दी वहाँ कैसे आ गए।

[अनुभाग-स]

18. निबंध :–

(i) स्वच्छता का जीवन में महत्त्व

प्रस्तावना :

एक कहावत है 'कुत्ता भी जब बैठता है तो पूंछ झाड़कर बैठता है।' इसका अर्थ यह है कि जब कुत्ता किसी स्थान पर बैठता है तब सबसे पहले उसे पूंछ से साफ कर लेता है, अर्थात् कुत्ता भी स्वच्छताप्रिय होता है। फिर मनुष्य को तो सफाई का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। वास्तव में, स्वच्छता जीवन में अत्यंत आवश्यक है। प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह सदैव स्वच्छता से रहे। अंग्रेजी में एक कहावत है 'सत्य के बाद स्वच्छता का स्थान है।'

स्वच्छता के प्रकार :

सफाई दो प्रकार की होती है। बाह्य और आंतरिक। बाह्य सफाई से प्रयोजन शरीर, वस्त्र, निवास आदि की स्वच्छता से है। आंतरिक स्वच्छता से तात्पर्य मन और हृदय की स्वच्छता से है।

इन दोनों में श्रेष्ठतर 'आंतरिक' स्वच्छता है। इसमें आचरण की शुद्धता जरूरी है। शुद्ध आचरण से मनुष्य का चेहरा तेजोमय होता है। सब लोग उसको आदर की दृष्टि से देखते हैं। उसके समक्ष प्रत्येक व्यक्ति स्वयं ही अपना मस्तक झुका लेता है। उसके प्रति लोगों में अत्यंत श्रद्धा होती है। बाह्य स्वच्छता में बालों की सफाई, नाखूनों की सफाई, कपड़ों की सफाई इत्यादि शामिल है। इसकी

अवहेलना करके मनुष्य स्वच्छ नहीं रह सकता। इसकी उपेक्षा करने से बड़े दुष्परिणाम नजर आते हैं। मनुष्य रोगग्रस्त होकर ना ना प्रकार के दुखों से पीड़ित रहता है। वह मनुष्य क्या कभी स्वस्थ रह सकता है, जो सर्वदा स्वच्छ जलवायु से वंचित रहता है? अतः यह स्पष्ट है कि स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता अनिवार्य है। यह प्रायः सभी लोगों का अनुभव है कि जो मनुष्य गंदे रहते हैं, वे दुर्बल और रुज्ण होते हैं। जो मनुष्य स्वच्छ रहते हैं, वे हष्ट–पुष्ट और निरोग रहते हैं।

विशेषताए :

स्वास्थ्य के अतिरिक्त बाह्य सफाई से चित्त को प्रसन्नता भी मिलती है। जब कोई मनुष्य गंदे वस्त्र पहने रहता है तब उसका मन मलिन बना रहता है और उसमें आत्मविश्वास की कमी महसूस होती है, परन्तु यदि वही मनुष्य स्वच्छ वस्त्र धारण कर लेता है तो उसमें एक प्रकार की स्फूर्ति और प्रसन्नता का संचरण हो जाता है। आपको यदि ऐसे स्थान पर छोड़ दिया जाए, जहाँ कूड़ा–करकट फैला हो, जहां मल–मूत्र पड़ा हो तो क्या आपका चित्त वहां प्रसन्न रहेगा? नहीं। क्यों? इसलिए कि आपको वहां दुख होगा, घृणा लगेगी। बाह्य स्वच्छता से सौंदर्य में भी वृद्धि होती है। एक स्त्री जो फटे, मैले–कुचैले वस्त्र धारण किए हुए है, उसकी ओर कोई देखता तक नहीं। परन्तु यदि वहीं स्त्री स्वच्छ वस्त्र धारण कर लेती है तो सुंदर दिखाई देने लगती है। धूल–धूसरित बनने की अपेक्षा स्वच्छ बालक सुंदर तथा प्रिय लगते हैं।

उपसंहार :

मनुष्य मात्र में स्वच्छता का विचार उत्पन्न करने के लिए शिक्षा का प्रचार करना अनिवार्य है। शिक्षा पाने से व्यक्ति स्वतः स्वच्छता की ओर प्रवृत हो जाता है। ध्यान रहे, बाह्य स्वच्छता का प्रभाव आतंरिक स्वच्छता पर भी पड़ता है। इसके अतिरिक्त आतंरिक स्वच्छता सत्संगति से मिलती है। सचमुच यह दुर्भाग्य ही है कि हममें से अधिकांश व्यक्ति स्वच्छता पर ध्यान नहीं दे पाते है। स्वच्छता उत्तम स्वास्थ्य का मूल है।

(ii) अनुशासन : एक वरदान

प्रस्तावना :

जीवन के सभी कार्यों में अनुशासन अत्यधिक मूल्यवान है। हमें हर समय इसका पालन करना है चाहे वो स्कूल, घर, कार्यालय, संस्थान, फैक्टरी, खेल का मैदान, युद्ध का मैदान या दूसरी जगह हों। ये खुशहाल और शांतिपूर्ण जीवन जीने की सबसे बड़ी जरूरत है। ये हमें ढेर सारे बड़े मौके देती है, अनुशासन आगे बढ़ने के लिये सही रास्ता देती है, जीवन में सही बातें सीखाती है, कम समय में ज्यादा अनुभव मिलता है आदि। जबकि अनुशासन की कमी की वजह से ढेर सारी दुविधा और गड़बड़ी होती है, अनुशासनहीनता की वजह से जीवन में शांति और प्रगति के बजाय ढेर सारी परेशानी उत्पन्न हो जाती है।

अनुशासन का महत्व और समस्याएँ :

अनुशासन अपने बड़ों, ऑफिस के सीनीयर, शिक्षक और माता–पिता के हुक्म का पालन करना है जिससे हम सफलता की ओर आगे बढ़ते हैं। हमें नियमों पर चलने की, आज्ञा का पालन करने की और सही तरीके से व्यवहार करने की जरूरत है। हमें अपने जीवन में अनुशासन के महत्व को समझना चाहिये। जो लोग अनुशासनहीन होते हैं वो अपने जीवन में बहुत सारी समस्याओं को झेलते हैं साथ ही निराश भी होते हैं।

अनुशासन किसी भी कार्य को ठीक ढंग से करने का एक तरीका है। इसके लिये आपके शरीर और दिमाग पर एक नियंत्रण की जरूरत होती है। कुछ लोगों के पास स्व–अनुशासन प्राकृतिक संपत्ति के रूप में होता है जबकि कुछ को इसे अपने अंदर विकसित करना पड़ता है। अनुशासन में वो दक्षता है कि वो भावनाओं को नियंत्रित कर सकता है और मुश्किलों से पार पाने के साथ ही सही समय पर सही कार्य करने में मदद करता है। बिना अनुशासन के जीवन अधूरा और असफल है। अपने बड़ों और वरिष्ठों का सम्मान करने के द्वारा हमें कुछ नियमों का पालन करना चाहिये।

ये जीवन के सभी कार्यों के लिये एक महत्वपूर्ण यंत्र है चाहे वो घर, कार्यालय, खेल का मैदान या दूसरी जगह हो। अगर हम अनुशासन का पालन न करें तो हमारा जीवन अव्यवस्थित हो जायेगा। इस दुनिया में हर चीज अनुशासित है और अनुशासन के द्वारा संगठित है। हवा, पानी और जमींन हमें जीवन जीने का रास्ता देते है। ये दुनिया, देश, समाज, समुदाय आदि सबकुछ बिना अनुशासन के असंगठित हो जायेगा क्योंकि सब कुछ अनुशासन पर निर्भर है। अनुशासन एवं स्वभाव है जो प्रकृति द्वारा प्रदत्त सभी चीजों में उपस्थित है।

अनुशासन की पालना एवं व्यवहार :

अनुशासित व्यक्ति आज्ञाकारी होता है और उसके पास उचित सत्ता के आज्ञा पालन के लिये स्वशासित व्यवहार होता है। अनुशासन पूरे जीवन में बहुत महत्व रखता है और जीवन के हर कार्यों में इसकी जरूरत होती है। यह सभी के लिये आवश्यक है जो किसी भी प्रोजेक्ट पर गंभीरता से कार्य करने के लिये जरूरी है। अगर हम अपने वरिष्ठों की आज्ञा और नियमों को नहीं मानेंगे तो अवश्य हमें परेशानियों का सामना करना पड़ेगा और असफल भी हो सकते हैं।

हमें हमेशा अनुशासन में होना चाहिये और अपने जीवन में सफल होने के लिये अपने शिक्षक और माता–पिता के आदेशों का पालन करना चाहियें। हमें सुबह जल्दी उठना चाहियें, नियमित दिनचर्या के तहत साफ पानी पीकर शौचालय जाना चाहियें, दाँतों को साफ करने के बाद नहाना चाहियें और इसके बाद नाश्ता करना चाहिये। बिना खाना लिये हमें स्कूल नहीं जाना चाहिये। हमें सही समय पर स्वच्छता और सफाई से अपना गृह कार्य करना चाहिये। हमें कभी भी अपने माता–पिता की बातों का निरादर, नकारना या उन्हें दुखी नहीं करना

चाहिये। हमें अपने स्कूल में पूरे यूनिफॉर्म में और सही समय पर जाना चाहिये। कक्षा में स्कूल के नियमों के अनुसार हमें प्रार्थना करना चाहिये। हमें अपने शिक्षकों की आज्ञा का पालन करना चाहिये, साफ लिखावट से अपना कार्य करना चाहिये तथा सही समय पर दिये गये पाठ को अच्छे से याद करना चाहिये।

हमें शिक्षक, प्रधानाध्यापक, चौकीदार, खाना बनाने वाले या विद्यार्थीयों से बुरा बर्ताव नहीं करना चाहिये। हमें सभी के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिये चाहे वो घर, स्कूल, कार्यालय या कोई दूसरी जगह हो। बिना अनुशासन के कोई भी अपने जीवन में कोई भी बड़ी उपलब्धि प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिये अपने जीवन में सफल इंसान बनने के लिये हमें अपने शिक्षक और माता–पिता की बात माननी चाहिये।

अनुशासन से प्रेरणा :

अनुशासन कुछ ऐसा है जो सभी को अच्छे से नियंत्रित किये रखता है। ये व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करता है और सफल बनाता है। हम में से हर एक ने अपने जीवन में समझदारी और जरूरत के अनुसार अनुशासन का अलग–अलग अनुभव किया है। जीवन में सही रास्ते पर चलने के लिये हर एक व्यक्ति में अनुशासन की बहुत जरूरत पड़ती है। अनुशासन के बिना जीवन बिल्कुल निष्क्रिय और निर्थक हो जाता है क्योंकि कुछ भी योजना अनुसार नहीं होता है। अगर हमें किसी भी प्रोजेक्ट को पूरा करने के बारे में अपनी योजना को लागू करना है तो सबसे पहले हमें अनुशासन में होना पड़ेगा। अनुशासन दो प्रकार का होता है एक वो जो हमें बाहरी समाज से मिलता है और दूसरा वो जो हमारे अंदर खुद से उत्पन्न होता है। हालाँकि कई बार हमें किसी प्रभावशाली व्यक्ति से अपने स्व–अनुशासन आदतों में सुधार करने के लिए प्रेरणा की जरुरत होती है।

हमारे जीवन के कई पड़ावों पर बहुत से रास्तों पर हमें अनुशासन की जरूरत पड़ती है इसलिये बचपन से ही अनुशासन का अभ्यास करना अच्छा होता है। स्व–अनुशासन का सभी व्यक्तियों के लिये अलग–अलग अर्थ होता है जैसे विद्यार्थीयों के लिये इसका मतलब है सही समय पर एकाग्रता के साथ पढ़ना और दिये गये कार्य को पूरा करना। हालॉकि काम करने वाले इंसान के लिये सुबह जल्दी उठना, व्यायाम करना, समय पर कार्यालय जाना और ऑफिस के कार्य को ठीक ढंग से करना। हर एक में स्वअनुशासन की बहुत जरूरत है क्योंकि आज के आधुनिक समय में किसी को भी दूसरों को अनुशासन के लिये प्रेरित करने का समय नहीं है। बिना अनुशासन के कोई भी अपने जीवन में असफल हो सकता है, अनुशासन के बिना कोई भी इंनसा कभी भी अपने अकादमिक जीवन या दूसरे कार्यों की खुशी नहीं मना सकता।

उपसंहार :

स्व–अनुशासन की जरूरत हर क्षेत्र में होती है जैसे संतुलित भोजन करना (मोटापे और बेकार खाने को नियंत्रित करना), नियमित व्यायाम (इसके लिये एकाग्रता की जरूरत है) आदि। गडबड़ और अनियंत्रित खाने पीने से किसी को भी स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएँ हो सकती हैं इसलिये स्वस्थ रहने के लिये अनुशासन की जरूरत है। अभिवावक को स्व–अनुशासन को विकसित करने की जरूरत है क्योंकि उसी से वो अपने बच्चों को एक अच्छा अनुशासन सिखा सकते हैं। उन्हें हर समय अपने बच्चों को प्रेरित करते रहने की जरूरत पड़ती है जिससे वो दूसरों से अच्छा व्यवहार करें और हर कार्य को सही समय पर करें। कुछ शैतान बच्चे अपने माता–पिता के अनुशासन को नहीं मानते हैं, ऐसे वक्त में अभिभावकों को हिम्मत और धैर्य के साथ अपने बदमाश बच्चों को सिखाना चाहियें। प्रकृति के अनुसार अनुशासन को ग्रहण करने की सभी व्यक्ति का अलग समय और क्षमता होता है। इसलिये, कभी हार मत मानों और लगातार प्रयास करते रहो अनुशासन में होने का छोटे–छोटे कदमों से ही बड़ी मंजिलें हासिल की जा सकती हैं।

(iii) मोबाइल का बढ़ता प्रचलन :

भूमिका :

भारत में 1990 के दौरान सबसे पहले मोबाइल फोन का इस्तेमाल करने की शुरूआत हुई। शुरूआत में जो मोबाइल फोन आये थे सभी लैंडलाइन के डिब्बे के तरह ही बड़े थे। उस समय मोबाइल फोन को एक ऐन्टेना लगा हुआ रहता था और उसी की वजह से मोबाइल फोन काफी भारी भी थे और इस तरह से ही मोबाइल फोन का इस्तेमाल करने की शुरूआत हुई।

लेकिन धीरे धीरे सभी जगह पर लैंडलाइन की जगह मोबाइल फोन ने ले ली। समय के साथ साथ मोबाइल फोन छोटे भी होते गए उसकी वजह से लोग ज्यादातर मोबाइल फोन का ही इस्तेमाल करने लगे।

आज के समय में मोबाइल फोन कई तरह के काम कर सकते हैं। मोबाइल से टेक्स्ट मेसेज भेजे जा सकते है, विडियों मेसेज भेजने का काम भी मोबाइल से ही किया जाता है और भी कई सारी सुविधाए है जो मोबाइल फोन देता है। किसी भी चीज़ की खोज करने के बाद उसकी कीमत धीरे–धीरे कम होती जाती है। यही बात मोबाइल फोन के साथ भी हुई और मोबाइल फोन की कीमत धीरे धीरे कम होने लगी। आज मोबाइल फोन इतने सस्ते हो चुके है की ₹500 में भी मोबाइल फोन मिल जाते है।

विशेषताए :

भारत में आज हर व्यक्ति के पास में एक मोबाइल फोन है। सब्जी बेचनेवाला, बस कंडक्टर, छात्र, ऑफिस जाने वाले लोग इनमें से सभी लोगों के पास मोबाइल फोन जरूर होता है। इस छोटे से गजेट ने पूरी दुनिया को खुद की तरफ आकर्षित कर लिया हैं।

मोबाइल फोन की वजह से ही कोई भी, कभी भी, किसी से भी बात कर सकता है और उससे मिल भी सकता है, और यह सब कुछ मोबाइल फोन की वजह से ही मुमकिन हुआ है।

आप अपने मोबाइल फोन से ई–मेल भी चेक कर सकते है। हम अपने खाली समय में मोबाइल पर गेम्स भी खेल सकते है।

मोबाइल फोन पर आप संगीत भी सुन सकते हो, विडियो क्लिप भी देख सकते हो। अगर आपको फोटो निकालना पसंद है तो आप मोबाइल फोन से अच्छे–अच्छे फोटोज भी खीच सकते हो।

लेकिन मोबाइल फोन का गलत इस्तेमाल करने से स्वास्थ्य से जुड़ी कई सारी नयी समस्याए सामने आ चुकी है जैसे की लम्बे समय तक मोबाइल का इस्तेमाल करने से पुरूषों में शुक्राणु की संख्या कम होती जा रही है। बच्चे परीक्षा में मोबाइल का गलत इस्तेमाल करके पेपर में आंसर लिखते है।

ऐसी टेक्नोलॉजी का क्या फायदा जो हमें अशांत, बेसब्र बना देती है, हमारे दिन को हर महत्वपूर्ण समय को हमसे छीन लेती है। हम बिच बिच पर घूमते तो है लेकिन समुद्र की लहरों की आवाज सुन नहीं पाते है। कोई भी नयी टेक्नोलॉजी आने के बाद उसके कुछ फायदे और नुकसान होते है लेकिन यह उस इन्सान की जिम्मेदारी है की वह किस तरह से उस नयी प्रोद्योगिकी का इस्तेमाल करता है।

मोबाइल फोन के फायदे :

- **व्यवसाय :** आज टेलीफोन जगत में व्यवसाय करने वाले करोड़ों लोग केवल मोबाइल फोन की वजह से एक दुसरे से जुड़े है। हर दिन इस क्षेत्र में युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर बढ़ते जा रहे है। सेल फोन की मदद से व्यवसाय करना काफी आसान काम हो चुका है।
- **स्थान जानना :** मोबाइल फोन इस्तेमाल करने की यह भी अच्छी बात है की हम किसी भी जगह का पता लगा सकते है। मोबाइल की जीपीएस टेक्नोलॉजी की मदद से हम कहाँ पर है इसके बारे में सारी जानकारी मोबाइल फोन बताता है। जब हम सफर कर रहे होते है तो उस समय हम अपने मित्रों को बता सकते है की हम किस जगह पर है।
- **फैशन पॉइंट :** आज की फैशन की सारी दुनिया मोबाइल के इर्दगिर्द ही है। अगर आपके पास में कोई अच्छा सा मोबाइल फोन नहीं है तो आप किसी भी फंक्शन में जाने से हिचकिचाते है।
- **अलार्म नोट्स और रिमाइंडर :** अगर कोई समय पर ऑफिस जाना चाहता है लेकिन ऑफिस के लिए हमेशा लेट हो जाता है तो मोबाइल फोन उसकी मदद कर सकता है। मोबाइल की अलार्म सुविधा की वजह से कोई भी अपने काम समय पर कर सकता है और साथ ही मोबाइल में कुछ रिमाइंडर और नोट्स भी लिख सकता है।

- **कई सारी सुविधाएँ एक ही जगह पर :** कई तरह की सुविधाएँ और फीचर केवल एक ही मोबाइल में उपलब्ध है। आप कोई भी कैलेंडर मोबाइल में देख सकते हो, पुराने कैलेंडर और आने वाले कैलेंडर की कोई भी तारीख मोबाइल में मालूम पड़ सकती है। मोबाइल के कैमरा से हजारों तस्वीरे खिचीं जा सकती है और वीडियोज भी बनाये जा सकते है। आज किसी को भी बाहर से कैलकुलेटर खरीदने की जरूरत नहीं क्योंकी मोबाइल में पहले से एक कैलकुलेटर दिया रहता है। स्मार्टफोन में तो टोर्च की भी सुविधा है।
- **जानकारी एक जगह से दूसरी जगह भेजने में मददगार :** आप एक मोबाइल फोन से दूसरे मोबाइल फोन में बड़ी आसानी से जानकारी भेज सकते हो। आप कुल ही पलों में आपके फोटो, विडियो और कुछ महत्वपूर्ण कागजात दूसरे के डिवाइस पर भेज सकते हो। आप अपनी महत्वपूर्ण जानकारी मोबाइल में स्टोर भी करके रख सकते हो।
- **कानूनी मामलों में सहायता :** कभी–कभी किसी को कानून का सामना भी करना पड़ सकता है और ऐसे समय में आप मोबाइल की कॉल रिकॉर्डिंग और एसएमएस डाटा रिकवरी की मदद से खुँद की समस्याए हल कर सकते हो। मोबाइल की इन बातों को सबूत के तौर पर पेश करने से आप कानूनी कारवाई से मुक्त हो सकते हो।

मोबाइल फोन के नुकसान

- **रिश्तेदारों से दूरी :** हर समय मोबाइल फोन का इस्तेमाल करने से हमारी और हमारे मित्र, परिवार और रिश्तेदारों से दूरी हो जाती है। मोबाइल फोन से होने वाला यही सबसे बड़ा नुकसान है जो अधिकतर लोगों को मालूम नहीं पड़ता है।
- **समय की बर्बादी :** समय बहुत ही मूल्यवान होता है इसीलिए समय का कभी भी दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। क्योंकी समय एक बार चला गया तो फिर वापस नहीं आता। लेकिन मोबाइल फोन का इस्तेमाल करते समय लोग वक्त को पूरी तरह से भूल जाते है, लोग जरूरत से ज्यादा समय मोबाइल फोन में गवा देते है। इसीलिए मोबाइल फोन का जरूरत पड़ने पर ही इस्तेमाल करना चाहिए और वो भी अच्छे कामों के लिए ही इस्तेमाल करना चाहिए।
- **शरीर की ऊर्जा का दुरूपयोग :** जब हम मोबाइल फोन का इस्तेमाल करते है तो हम हमारी कई सारी ऊर्जा ऐसे ही बर्बाद कर देते है, क्योंकी जब हम मोबाइल पर समय बिताते है तो उस वक्त हमारी आँखे, हाथ और दिमाग की बहुत सारी ऊर्जा मोबाइल पर खर्च हो जाती है।
- **कई सारी बीमारियों की जड़ :** मोबाइल का जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल करने से त्वचा की बिमारिया, कैंसर और आँखों की बीमारिया भी हो सकती है।

- **पढ़ाई में नुकसान** : मोबाइल का सबसे ज्यादा नुकसान किसी को होता है तो वो स्कूल जानेवाले छात्रों को ही होता है। मोबाइल का इस्तेमाल करने से छात्रों का ध्यान पढ़ाई से पूरी तरह से भटक जाता है और कुछ छात्र परीक्षा में फैल भी हो सकते है।
- **जान जाने का खतरा** : कुछ लोग गाड़ी चलाते वक्त मोबाइल पर बाते करते रहते है ऐसा करने से उनका ध्यान भटकता है और कभी–कभी दुर्घटना में जान भी जा सकती है। हवाई जहाज में मोबाइल का इस्तेमाल करने से हवाई जहाज के वायरलेस सिस्टम में गड़बडी होने की वजह से प्लेन क्रेश होकर जान भी जा सकती है।
- **डाटा की चोरी** : अगर आपके मोबाइल में खुद की कुछ तस्वीरे, विडियो और फाइल्स है तो लोग उसे भी बड़ी आसानी से चुरा सकते है। एंड्राइड फोन से तो कोई भी डाटा चोरी कर सकता है लेकिन आईओएस ऑपरेटिंग सिस्टम में डाटा कुछ हद तक सुरक्षित रहता है।
- **कानूनी जाँच में गिरफ्तारी** : अगर आपका मोबाइल फोन चोरी हो जाए तो जल्द से जल्द पुलिस थाने में शिकायत दर्ज करनी चाहिए क्योंकी अगर किसी जगह पर चोरी हो जाए और वहाँ से पुलिस को अपका सिमकार्ड मिल जाए तो आपको चोरी की जाँच में गिरफ्तार भी किया जा सकता है।
- **झूठ बोलना** : मोबाइल फोन का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि जब लोग मोबाइल पर बाते करते है कई बार झूठ बोलते है कुछ समय बाद लोगों को झूठ बालने की आदत लग जाती है और उन्हें पता भी नहीं चलता।

उपसंहार :

मोबाइल आने से पहले लोग लैंडलाइन का इस्तेमाल करते थे। लेकिन लैंडलाइन की कुछ कमिया थी जैसे की हम हर जगह पर लैंडलाइन को लेके नहीं जा सकते थे। इसीलिए लोगों को मोबाइल का आविष्कार करना पड़ा। आज के समय में मोबाइल लोगों के जीवन का जरूरी हिस्सा बन चुका है। अगर एक दिन मोबाइल फोन का इस्तेमाल नहीं किया तो लोगों के कई सारे काम अधूरे रह जाते है। इसीलिए आज मोबाइल की अहमियत काफी बढ़ चुकी है।

(iv) दहेज–एक सामाजिक कलंक

प्रस्तावना :

आज भारतीय समाज में सबसे बड़ा सामाजिक कलंक है– दहेज प्रथा। दहेज जैसी कुप्रथा न केवल समाज बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र के विकास के मार्ग में अवरोधक है। समाज इस कुप्रथा के कारण जर्जर होता जा रहा है।

यद्यपि प्राचीन समय से ही पिता द्वारा अपनी कन्या को उपहार, इत्यादि देने का प्रचलन था तथा इसने कुरूपता धारण नहीं की थीं, किन्तु शनै–शनैः यह विकृत स्वरूप धारण करती गई और दहेज प्रथा जैसे कलंकित नाम से 'अलंकृत' हो गई।

चिन्तनात्मक विकास :

विज्ञान ने समस्त विश्व को सीमित कर दिया है। इतनी विशाल दुनिया सिमट कर रह गई है। हम इसके सहारे न जाने कहाँ–कहाँ तक पहुँच गए हैं और दूसरी ओर हम घिसी–पिटी परम्परा पर ही जमकर बैठ गए हैं। कहाँ तक इसमें औचित्य है।

यह एक प्रकार से चिन्तनीय विषय है। इस प्रथा का प्रभाव गाँवों में ही नहीं अपितु नगरों में भी है। सुसंस्कृत और सुशिक्षित नगरवासियों में भी दहेज रूप में धन लोलुपता बढ़ती चली जा रही है। लड़के की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति के आधार पर यह दहेज लड़की वालों से माँगा जाता है। यदि लड़का किसी अच्छे या ऊँचे पद पर है तो दहेज की मात्रा की माँग और अधिक बढ़ जाती है। लड़की वाले की स्थिति के विषय में ये कभी विचार ही नहीं करते। परिणामस्वरूप लड़की के माता–पिता दहेज जुटाने में कर्जदार हो जाते हैं। लड़कियों द्वारा विवाह से पूर्व ही दहेज न देने के कारण आत्मक्ष्मायें कर दी जाती हैं। अथवा नवविवाहिता द्वारा कम दहेज देने या दहेज न देने के कारण आत्महत्याए कर ली जाती हैं। आज प्रतिदिन ऐसी घटनाऐं देखने एवं सुनने में आती हैं।

दहेज की माँग से तो ऐसा मालूम होता है कि यह विवाह न होकर लड़के का सौदा हो रहा है। हमारे देश में हर जगह हर वर्ग में दहेज प्रथा का विकृत स्वरूप व्याप्त है। यद्यपि देश में समाजसुधारकों एवं धर्मतत्वेत्ताओं की कमी नहीं रही है तथापि यह 'कुप्रथा' दिन पर दिन विकट रूप धारण करती जा रही हैं यह बड़े खेद का विषय है।

उपसंहार :

दहेज प्रथा जैसे सामाजिक कलंक को दूर करने के लिए अनेक संगठन कार्यरत हैं। अनेक अधिनियम बनाये गए हैं किन्तु कोई भी प्रयास तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि स्वयं हमारे देश के नवयुवक जागृत न हो और लोगों की खोखली मानसिकता परिवर्तित, परिमार्जित एवं परिवर्धित न हो।

''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, छल में है दूध और अस्त्रों में पानी''

हमारा भारत देश हमेशा से ही ऋषियों मुनियों एवं योगियों की जन्मभूमि रहा है। धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से यह देश एक ओर सुसम्पन्न है तो दूसरी ओर हमारे भारतीय समाज में स्वतन्त्रता से पूर्व एवं पश्चात् भी अनेक रूढियाँ, कुप्रथाएँ, अंधविश्वास, एवं कुरीतियाँ इत्यादि विद्यमान हैं।

○○○